परीक्षा जीवन का एक भाग है।

मत्ती २६:४१ – जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, परन्तु देह दुर्बल है। हम हमारे जीवन के परीक्षा के समयों में कैसे जय पा सकते हैं? हमारे जीवन के परखने के समयों के लिए कोई छोटा रास्ता नहीं है। येशु लोगों से जीवन के मार्ग के बारे में प्रचार करता है और उसके सिखाने के बाद वह अपने शिष्यों से कहता है कि हम दूसरी ओर जाएँ। लेकिन उसने यह नहीं कहा कि मार्ग में किन अनिश्चितताओं का सामना करना होगा। लोग खुशी से नाव में बैठ गए और अपनी यात्रा प्रस्थान किए। समुद्र के मध्य उन्होंने तूफ़ान का सामना किया, लोग हड़बड़ा गए और चिल्लाने लगे। चेले भी परेशान हो गए, उन्होंने येशु को जगाया और कहा "तुम सो रहे हो, हम यहाँ मर रहे हैं, जागो, जागो।" तब येशु ने उनसे कहा "कितनी बार मैंने तुम्हे सिखाया, विश्वास रखो, तुम्हारा विश्वास कहाँ है?" आज भी, हम सब स्वर्गीय राज्य पहुँचना चाहते हैं, लेकिन हम मार्ग के परिक्षाओं और संकटों के बारे में नहीं जानते। लेकिन याद रखना, यह केवल हमारा "विश्वास" है जो हमे पार ले जा सकता है। केवल हमारी प्रार्थना हमे विजय दे सकता है इन कठिन समयों में। दुष्ट से जीतने के लिए येशु ने हमे क्या सिखाया है? **मत्ती २६:४१ – जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, परन्तु देह दुर्बल है।** हमारी आत्मा तो चाहता है लेकिन शरीर कमज़ोर है। हमारा शरीर जीवन के उन वस्तुओं का अभिलाषा करती है। लेकिन पवित्र आत्मा द्वारा हमे शरीर की अभिलाषाओं पर संयम पाना है। इसलिए, परमेश्वर की इच्छा हमारे लिए यह है कि हम आत्मा में प्रार्थना करें। जब हम परमेश्वर को हमारे जीवन में पहला स्थान देते हैं, अपने–आप ही हमारा शारीरिक तन परमेश्वर के जो आत्मा हमारे भीतर है उसी के इच्छाओं को समर्पित होता है। हर एक जीवन के स्थिति में जब हम परमेश्वर को पहला स्थान देते हैं, हमारा शरीर मज़बूत होता हैं और आत्मा के अधीन होता है। यह सभी आयु के लोगों के लिए लाभ–दायक है, चाहे वे बच्चें हो, जवान हो, जोड़ियाँ हो, या बुजुर्ग, याद रखे हमे उस भजन संहिता के रचईता के जैसे प्रार्थना करना हैं **भजन संहिता १९:१३–१४ – अपने दास को ढिठाई के पापों से बचाए रख; वे मुझ पर प्रभुता करने न पाएं; तब मैं निर्दोष बना रहूँगा, और बड़े बड़े अपराधों से बचा रहूँगा। मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहणयोग्य हों, हे यहोवा, मेरी चट्टान और मेरे उद्धारकर्ता।** हमे परमेश्वर से प्रार्थना करना है

– मुझे धैर्य से करने वाले पापों से दूर रख, यह मुझ पर नियंत्रण न करें और परमेश्वर तू मुझे उसके विनाष से दूर रखना। हम कभी भी हमारे पापों पर विजय नहीं पा सकते, यह केवल हमारी प्रार्थनाओं से ही हो सकता है। हमे प्रार्थना करना है परमेश्वर से कि वह हमे उसके लिए एक योग्य पात्र बनाए। हम में से बहुत लोग पापी जीवन जीते हैं लेकिन हमारे पापों पर हमे नियंत्रण नहीं हैं, हमारी कमज़ोर प्रार्थना के जीवन के कारण हमने परमेश्वर को उसका सही स्थान हमारे जीवन में नहीं दिया है। जब हम गिरते हैं यह केवल परमेश्वर का अनुग्रह है जो हमे बचाता है और हमे एक और बार उठाता है।

रोमियों ६:१४ – तब पाप तुम पर प्रभुता करने नहीं पाएगा, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हो। जब हम पापों में गिरते हैं, यह केवल उसका अनुग्रह है और केवल अनुग्रह ही है हमे जो बचाता है। पवित्र शास्त्र में हम राजा अबीमेलेक के भाग को जानते है, कैसे वह सारा, अब्राहम की पत्नी से विवाह करने कि तैयारियाँ कर रहा है। वह यह सोचकर कि सारा अब्राहम की बहन है। उस समय परमेश्वर उससे उसके सपने में बात करता है और कहता है जैसे दिया गया है **उत्पत्ति २०:६ – तब परमेश्वर ने स्वप्न में उस से कहा, ष्हां, मैं जानता हूँ कि तू ने निर्दोष हृदय से ही ऐसा किया है, और मैंने ही तुझे अपने विरूद्ध पाप करने से बचाया है; इसलिए मैंने तुझे उसे स्पर्श तक नहीं करने दिया।** यह परमेश्वर का अनुग्रह है और परमेश्वर का प्यार है राजा अबीमेलेक के लिए। राजा अबीमेलेक सारा से प्यार करता था क्योंकि अब्राहाम ने कहा की सारा उसकी बहन है। इसी प्रकार, हमारे जीवन में भी आज, जब हम मासूमियत में पाप करते हैं, परमेश्वर हमे क्षमा करता है, लेकिन जब हमारे पाप धैर्य से और बार–बार होता है, उसका क्रोध हम पर आता है। परमेश्वर हमारे पापों को जो मासूमियत में किए गए हैं, क्षमा करता है, लेकिन जब हम धैर्य से पाप करते हैं और झूठ बोलते है, परमेश्वर हमारे पाप और हमारे झूठ से नफ़रत करता है। **भजन संहिता १०१** में दाऊद को राजा बनाए जाने के बाद, यह कहता है कि ऐसे दुष्ट कार्य करने वाले प्रभु के शत्रु हैं और वह प्रभु के नगर से सारे दुष्ट कार्य करने वालों को काट देगा। परमेश्वर हमारे हर परिस्थिति को जानता है, जैसे कि वह जानता था कि राजा अबीमेलेक का हृदय शुद्ध है क्योंकि वह नहीं जानता था कि सारा अब्राहाम कि पत्नी है। इसी प्रकार, परमेश्वर हमसे प्यार करता है, वह जानता है कि हम किस स्थिति में पाप करते हैं। उसका अनुग्रह ऐसे लोगो पर है और वह उनका ख़याल रखता है।

उत्पत्ति २०:१–६ – अब्राहाम वहां से नेगेव देश को गया और कादेश तथा शूर के बीच जा बसा। वह प्रवासी के रूप में गरार में रहने लगा। और

अब्राहाम ने अपनी पत्नी सारा के विषय में कहा, वह मेरी बहन है,' अतः गरार के राजा अबीमेलेक ने सारा को बुलवाकर अपने पास रख लिया। पर रात को स्वप्न में परमेश्वर ने अबीमेलेक के पास आकर कहा, देख, जिस स्त्री को तू ने रख लिया है उसके कारण तू मर जाएगा, क्योंकि वह विवाहित है। परन्तु अबीमेलेक उसके पास न गया था, इसलिए उसने कहा, 'प्रभु, क्या तू निर्दोष जाति को भी घात कर डालेगा? क्या उसने स्वयं मुझ से नहीं कहा, 'वह मेरी बहन है? और उस स्त्री ने भी स्वयं कहा था, वह मेरा भाई है।" यह कार्य मैंने अपने निर्दोष हृदय से बिना किसी दुर्भावना के किया है।" तब परमेश्वर ने स्वप्न में उस से कहा, 'हां, मैं जानता हूँ कि तू ने निर्दोष हृदय से ही ऐसा किया है, और मैंने ही तुझे अपने विरूद्ध पाप करने से बचाया है; इसलिए मैंने तुझे उसे स्पर्श तक नहीं करने दिया। याद रखना परमेश्वर हमारे हर कमज़ोरी को जानता हैं, जब हम हमारी दुर्बलताओं को उसके सामने बताते हैं, उसका अनुग्रह हमपर होगा। जब हम सोचते हैं कि परमेश्वर हम पर नहीं देख रहा हैं और हम पाप करते रहते हैं, परमेश्वर हम पर क्रोधित होगा। राजा अबीमेलेक सारा से विवाह करने की तैयारियाँ कर रहा था, लेकिन यह जाने बगैर कि सारा, अब्राहाम की पत्नी है। लेकिन परमेश्वर राजा अबीमेलेक के हृदय को जानता है और उसे चेतावनी देता है। इसी तरह परमेश्वर हमारी हर कमज़ोरी को जानता है, वह हमारे कमीपन को जानता है, वह हमारे हृदय को जानता है। पर जब हम पाप करते है, हमें परमेश्वर से बलवा नहीं करना चाहिए, परंतु दीन होकर उसके अधीन होना चाहिए। परमेश्वर पापीयों से प्रेम करता है, हमारे पापों से नहीं। इस लिए सारे पापों से दूर रहने के लिए हमे ज़्यादा प्रार्थना करना है और परमेश्वर की आत्मा हमे बलवंत करेगा सारे परीक्षाओं का सामना करने के लिए। जब हम प्रार्थना नहीं करते, हम आत्मा में कमज़ोर होते हैं, हम काँपने लगते हैं और हम हड़बड़ाते हैं। लेकिन हमारे जीवन में कोई आसान मार्ग नहीं है, प्रार्थना सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ है हमारे जीवन में। येशु मसीह के जीवन में, वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। वह इस संसार में एक सुतार का बेटा बन कर आया। **इब्रानियों ४:१५ – क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमसे सहानुभूति न रख सके।** वह तो सब बातों में हमारे ही समान परखा गया, फिर भी निष्पाप निकला। येशु मनुष्य के रूप में भेजा गया, इसलिए वह हमारे जैसे जीया, परिक्षाओं का सामना किया ओर उसने अपने–आप को पाप के हर रूप से दूर रखा और सारे दुष्ट पर विजई हुआ। इसलिए, हम अपना जीवन उसके हाथ में दे, वह एक अच्छा सलाहकार और गुरू है, इसलिए हमे अपना जीवन उसके नियंत्रण में छोड़ना है। हमे हमारे शारिरिक रूप को उसके हाथों में सौंपना हैं, यह कि, हमारी आँखें, हमारे हाथ, हमारे कान,

हमारी जुबान, आदि। येशु जानता था कि लुभाने वाला आनेवाला है उसे लुभाने के लिए, इस कारण उसने उपवास और प्रार्थना ४० दिनों तक रखा इससे पहले कि वह लुभाया गया। येशु ने स्वंय बुद्धि नही इस्तमाल की ना हि उसने लुभाने वाला का मुकाबला किया लेकिन उपवास और प्रार्थना किया इसपर जय पाने के लिए। कितना और अधिक महत्तवपूर्ण है प्रार्थना हमारे जीवन में। क्या लुभाने वाला ने येशु को शारिरिक रूप में नहीं लुभाया? हाँ। लेकिन येशु ने लुभाने वाला पर केवल "वचन" से जय पाया। हम देखते हैं कि जब येशु को प्रलोभन के महान परीक्षा से गुज़रना था गतसमनी के बगीचे में, यह केवल प्रार्थना ही था जिससे वह इस वेधना पर जय पाया। अब जब समय आया कि सारे लोग इकट्ठे हुए येशु को पकड़ने के लिए, वह जानता था कि क्या होने वाला है, इसलिए येशु गतसमनी के बगीचे में उसके पिता से प्रार्थना करने गया, वहाँ हमने देखा कि उसका पसीना खून में बदला। उसने उसके पिता को घोर वेधना और दुख से पुकारा। वह कहता है अगर तेरी इच्छा है, यह प्याला मुझ से ले ले, मेरी नहीं लेकिन तेरी इच्छा पूरी हो जाए।" आज भी, अगर दुष्ट हमारे रास्ते पर खड़ा है हम कोई कुश्ती से दुष्ट पर विजय नहीं पा सकते हैं, लेकिन केवल प्रार्थना से ही उसपर पर जय पा सकते हैं। याद रखो, येशु हमेशा पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता था, जब भी वह कोई संकट में होता। **मत्ती २६:३८–३९ – फिर उसने उनसे कहा, ष्मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने पर हूँ। यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो। फिर वह उनसे थोड़ा आगे बढ़ा और मुँह के बल गिरकर यह प्रार्थना करने लगाः हे मेरे पिता, यदि सम्भव हो तो यह प्याला मुझ से टल जाए। फिर भी मेरी नहीं, पर तेरी इच्छा पूरी हो।"** हाँ, येशु भी दुखी था, वह जानता था कि क्रूस पर जाने का समय आ चुका है। येशु अपने–आपको उसके पिता के हाथ में सौंपता है येशु दुखी है, लेकिन खुद के लिए नहीं, उन लोगों के लिए जो उसपर विश्वास नहीं करते थे। जब येशु इस संसार में सिखाता था, उसके पीछे बहुत भीड़ रहती थी। लेकिन जब वह क्रूस पर गया केवल तीन लोग क्रूस के पास थे, वें हैं मरियम मगदलीनी, उसकी माता मरियम और उसका एक चेला युहन्ना। **लूका २२:४४ – येशु व्याकुल होकर आग्रहपूर्वक प्रार्थना कर रहा था, ओर उसका पसीना रक्त की बूँद के समान भूमि पर गिर रहा था।** लूका कहता है, येशु दुखी होकर उसने बड़ी करूणा से प्रार्थना किया था, उसका पसीना खून में बदला। जब येशु शत्रु के हाथों में सौंपा गया, उसने उसके शरीर को काबू में रखा, बिना किसी रूकावट के उसने सारे कोड़े हमारे लिए सहा। और यह वह समय था जब परमेश्वर पिता ने उसके मूँह को येशु से फेर लिया था, उसने अपना आखरी श्वास लिया

और उसके प्राण को तुम्हारे और मेरे लिए दिया। पिता परमेश्वर ने येशु से मुँह क्यों फिराया? हमारे कारण! इसलिए आज, यह हमारी अच्छाई और महानता के कारण नहीं कि हम दुष्ट पर जय पा सकते हैं, हमारे शरीरों को भी हम नियंत्रित रख सकते हैं, कोई बाहरी शक्तियों से नहीं केवल "प्रार्थनाओं से। याद रखो, परमेश्वर के राज्य करने के लिए, हम में से हर एक को अलग–अलग तरह के तुफ़ानो का सामना हमारे जीवनों में करना पढ़ता हैं। हर एक के इम्तहान और कष्ट अलग है। लेकिन परमेश्वर हम में से हर एक को हमारे जीवनों के तूफ़नों का सामना करने के लिए उसका अनुग्रह ही देता है। **इब्रनियों ५:७ – अपनी देह में रहने के दिनों में मसीह ने उस से जो उसको मृत्यु से बचा सकता था उच्च स्वर से पुकारकर और आँसू बहा बहा कर प्रार्थनाएं और विनतियां कीं और आज्ञाकारिता के कारण उसकी सुनी गई।** येशु शरीर में जीया, उसने उसके पिता से कैसे प्रार्थना किया? कराहकर और रोरोकर। सच्ची प्रार्थनाएँ और माँग हृदय से किए जाने चाहिए। प्रार्थना का अर्थ है परमेश्वर से बात करना, परमेश्वर हमारी हर एक बात को सुनता और वह जवाब देने के लिए तैयार है जो कुछ भी हम पवित्रता और हृदय की सच्चाई से माँगते हैं। हमें सामर्थ से प्रार्थना करने के लिए सीखना है, हम प्रभु में अब शिशु नहीं हैं, क्योंकि हम अब ठोस आहार खा रहें हैं। इसलिए, जब येशु देह में था, वह अपने पिता से कैसे प्रार्थनाएँ करता था? **इब्रनियों ५:७ – अपनी देह में रहने के दिनों में मसीह ने उस से जो उसको मृत्यु से बचा सकता था उच्च स्वर से पुकारकर और आँसू बहा बहा कर प्रार्थनाएं और विनतियां कीं और आज्ञाकारिता के कारण उसकी सुनी गई।** एक बार वह उसके पिता के इच्छा को जानता था, वह मृत्यु से पीछे नहीं हटा, वह जानता था कि उसके जीवन का बलिदान देना होगा, हम जानते हैं दानिय्येल के कहानी को – राजा ने एक राजाज्ञा दिया कि कोई भी अगले तीस दिन एक राजा के अलावा किसी परमेश्वर या मनुष्य से प्रार्थना करेगा, उसे सिंह के गुफें में ड़ाला जाएगा – लेकिन क्या दानिय्येल इस राजाज्ञा से ड़रा? नहीं, वह उसके परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा खिड़कियों को खोलके हमेशा के तरह प्रार्थना करता था। इस प्रार्थना में सिंह के मूँह को गुफ़े में बंद किया। आज भी, अगर हमे सिंहों और गोलियतों का सामना करना है, प्रार्थना हमारे जीवनों में सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ है। बच्चों के लिए भी, पाठशालाओं में और कॉलेजों में, अगर हमारे जीवन में सिंह है, प्रार्थना करो और परमेश्वर सुनेगा और उत्तर देगा और सारे अड़चनों को हमारे जीवनों से निकाल देगा। **प्रकाशितवाक्य ३:१० – इसलिए कि तू ने मेरे धैर्य के वचन का पालन किया है, मैं भी परखे जाने की घड़ी में तुझे बचा रखूँगा, अर्थात उस घड़ी में जो**

सारे संसार पर आनेवाली है कि पृथ्वी के निवासी परखे जाएं। परीक्षा के समय, परमेश्वर हमे बचाएगा, क्योंकि हम उसके "वचन" का आज्ञा मानते हैं। जब येशु दूसरे आगमन में लौटेगा, वह शुद्ध करने नहीं लेकिन उसके चुने हुओं को इकट्ठा करने के लिए आएगा। आज परमेश्वर ने वचन द्वारा शुद्ध करने के कार्य को सेवकों को दिया है। हम चुने हुए सभा हैं इसलिए वह उसका वचन हर सेवा में देता है अपने आप को शुद्ध करने के लिए। हम याकूब और यूसुफ का परिवार बनना है, न कि, एसाव के परिवार के तरह भूसा बनना है। इसलिए परमेश्वर का वचन इस स्थान में हमे शुद्ध करता रहेगा। उसका आग हम पर गिरेगा और हमे साफ़ और शुद्ध करेगा। हमे परमेश्वर के वचन को मानना हैं और उसके आज्ञा को। जैसे राजा अबीमेलेक परमेश्वर द्वारा बचाया गया और उसकी अनुग्रह राजा पर थी, उसी प्रकार परमेश्वर हमे भी उसके अनुग्रह से बचाएगा। **भजन संहिता ९१:१३ – तू सिंह और नाग को कुचलेगा, जवान सिंह और अजगर को तू रौंदेगा।** जब हम परमेश्वर के वचन को मानते हैं और हमारे प्रार्थनाओं में सामर्थवान होते हैं, हम सिंह और अजगर को कुछल पाएंगे और जवान सिंह और अजगर को पैरों के नीचे कुछलेंगे। पवित्र शास्त्र में हम देखते हैं कि याकूब संकट का सामना उसके भाई एसाव के रूप में करता है। जब उसका भाई चार सौ आदमियों को उसके विरूद्ध लड़ने के लिए लाता है, परमेश्वर का दूत यह योजना के बारे में याकूब को बताता है। **उत्पत्ति ३२:६–८ – और दूतों ने याकूब के पास लौट कर कहा, ष्हम तेरे भाई एसाव के पास गए थे और वह भी तुझ से भेंट करने आ रहा है, और उसके साथ चार सौ पुरूष हैं।" तब याकूब बहुत डरा और घबरा गया; और उसने उन लोगों को जो उसके साथ थे और भेड़–बकरियों, गाय–बैलों और ऊंटों को दो दलों में बाटं दिया, क्योंकि उसने कहा, ष्यदि एसाव आकर एक दल पर आक्रमण करे तो दूसरा दल भाग कर बच जाएगा।"** जब याकूब को खबर मिलती है, वह उस परपस्थिति से स्वंय बुद्धि से जय पाने की कोशिश करता है। हम भी इसी प्रकार के हैं, जब संकट के समय हमारे सामने आते हैं, हम अपनी बुद्धि और ज्ञान का प्रयोग करते हैं और यहाँ–वहाँ भागने लगते हैं आसान रस्ता पाने के खोज में। इसी प्रकार, याकूब बहुत–सी चीज़ों की योजना करता है, वह उसके लोगों को दो दलों में विभाजित करता है और अपने भाई के विरूद्ध युद्ध करने केलिए तैयार होता है। लेकिन, वह बाद में, परमेश्वर का वादा जो उसके लिए है याद करता है, वह उसे पुकारता है। **उत्पत्ति ३२:९–१२ – याकूब ने कहा, ष्हे परमेश्वर, मेरे दादा अब्राहाम और मेरे पिता इसहाक के**

परमेश्वर; हे यहोवा, तू ने तो मुझ से कहा था कि अपने देश में अपने सम्बनधियों के पास लौट जा और मैं तुझे सम्पन्न करूंगा। मैं तो तेरी सब करूणा और सब सच्चाई के उन कामों के योग्य नहीं हूँ जो तू ने अपने दास पर प्रकट किए क्योंकि मैं तो केवल अपनी लाठी लेकर यरदन के पार गया था और अब तो मेरे पास दो दल हो गए हैं। मैं विनती करता हूँ कि मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से छुड़ा; क्योंकि मैं उस से डरता हूँ, कहीं ऐसा न हो कि वह आकर मुझ पर आक्रमण करे और माताओं को बच्चों सहित मार डाले। तू ने तो कहा था, ‘मैं निश्चय तुझे सम्पन्न करूँगा और तेरे वंश को समुद्र की बालू के कणों के समान बढ़ाऊँगा जिनकी गिनती नहीं हो सकती।" परमेश्वर जिसने याकूब को पहले से ही बताया कि उसका भाई एसाव एक सेना जो चार सौ लोगों का है, लेकर आ रहा है उससे युद्ध करने के लिए, यह वही परमेश्वर है जिसने उसे इस परिस्थिति से भी बचाता है। परमेश्वर ने याकूब को उसके भाई के हाथों में नहीं दिया। इसी प्रकार, जब हम प्रार्थना में हैं प्रभु के साथ परमेश्वर हमे भी दिखाएगा और हम पर दुष्ट की बहुत सी योजनाओं का खुलासा करेगा। **१ कुरिन्थियों १०:१३ – तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर तो सच्चा है जो तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में पड़ने नहीं देगा, परन्तु परीक्षा के साथ साथ बचने का उपाय भी करगा कि तुम उसे सह सको।** हमारा परमेश्वर केवल उतने ही परीक्षाओं को भेजेगा जितना हम सहन कर सकते हैं, लेकिन हर परीक्षा और संकट में, यह केवल परमेश्वर का अनुग्रह है जो हमे विजय दे सकता है। हमारे बुद्धि और ज्ञान से हम कुछ नहीं कर सकते। हमे अपने शरीर को कोई भी प्रलोभन में नियंत्रित रखना है। यह केवल परमेश्वर का अनुग्रह ही है जो हमे हर प्रलोभन में उठा सकता है। हमारी प्रार्थना का जीवन मज़बूत होना चाहिए। हमारा परमेश्वर, जो विश्वासी है, हमे हमारे सहन करने की क्षमता से ज़्यादा लुभाने नहीं देगा। हाँ, हमारे जीवन को दुष्ट की हर योजना से बचने के लिए हमे "प्रार्थना" में मज़बूत होना ज़रूरी है। हो सकता है आज तक लुभाने वाला हमारे सामने नहीं आया है। लेकिन अंत का समय निश्चय निकट है, हो सकता कि तुम्हारे और मेरे निकट नहीं आया हो। हम ने कुछ समय पहले एक समाचार सुना था, हमने देखा कि एक आदमी पानी पर चल रहा है, जैसे येशु गलील कि समुद्र पर चला था। जैसे कि पवित्र–शास्त्र कहता है, लुभाने वाला हर कार्य को जो प्रभु ने किया कुशलता से करेगा ताकि हम धोखा खाएँ। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, आदम और हव्वा उसकी पहली रचना थी और वें आनंद से अदन की वाटिका में वास करते थे। दुष्ट यह सहन नहीं कर पाया और उसने हव्वा को लुभाया सेब खाने के लिए और मनुष्य–जाति को गिराया। उस समय से आदम और हव्वा परमेश्वर

से छिपने लगे और अदन की वाटिका से फ़ेंके गए। हमे बहुत सावधान रहना है लुभाने वाला से। हम यह भी देखते हैं कि कैसे परमेश्वर अब्राहाम को आकश के तारें दिखाता है और वादा करता है कि उसकी पीढ़ी आकाश के तारों के समान होगा, अगर वें गिने जा सकते हैं। **उत्पत्ति १५:५ – और बाहर ले जाकर उसने उस से कहा, अब आकाश की ओर देख और यदि गिन सके तो तारों को गिन।" फिर उसने कहा, तेरा वंश भी ऐसा ही होगा।"** लेकिन याद रखें कि जब लुभाने वाला इस्राएली लोगों पर क्रोधित था, वह दाऊद को इस्राएल के लोगों कि गिनती करने के लिए कहता है, इस प्रकार वह दाऊद को प्रलोभन मे ड़ालता है और दाऊद उसके लोगों को गिनता है। परमेश्वर का क्रोध दाऊद पर गिरा और जब उसने माफ़ी माँगी, परमेश्वर का क्रोध कम हुआ और इस्राएली लोगों को युद्ध से बचाया। परमेश्वर हम पर परीक्षा और संकट क्यों लाता है? हमारे "विश्वास" को परखने के लिए और हमे "प्रार्थना" में मज़बूत होने में मदद करने के लिए। इसलिए, परमेश्वर कहता है – तुम अगर एक आँख को खो देते हो, चिंता न करो, तुम फिर भी परमेश्वर के राज्य में एक ही आँख के साथ परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकते हो। याद रखें, येशु जानता था पहले से ही कि लुभाने वाला आ रहा है, इस लिए उसने चालिस दिन और चालिस रात उपवास करके अपने–आप को तैयार किया लुभाने वाले का सामना करने के लिए। हर परिस्थिति में, येशु ने उसके पिता से प्रार्थना किया। गतसमनी के बगीचे में भी, येशु ने तब तक प्रार्थना किया जब तक कि उसका पसीना लहु में बदला और उसने उसके पिता से पुकारा कि यह प्याला उस से हट जाए, ष्लेकिन मेरी नहीं तेरी इच्छा पूरी हो"। हम अपने जीवन को बहुत लापरवाही से जीते हैं, हम हमेशा हमारे शरीर को महत्त्व देते हैं, नाकि हमारे आतमिक जीवन को। जब हम परमेश्वर को हमारे जीवन में पहला स्थान देंगे, वह हमेशा हमारी मदद करेगा हर दुष्ट पर जय पाने के लिए हमारे जीवन में। इसलिए हमारे जीवन में या घर में हमें परमेश्वर को पहला स्थान दें। जब हम यह करते हैं परमेश्वर हमे हर बार जब हम गिरते हैं, हमे उठाएगा। ड़रो नहीं, मज़बूत हो जाओ और तुम्हारे "प्रार्थना के जीवन" को मज़बूत बनाओ।

यह संदेश सबके लिए आशीष बने जो इसे पढ़ते हैं।

पास्टर सरोजा म.